22. भारत भी महाशक्ति बन सकता है

• श्रीधर पराड़कर

लेखक परिचय –

मध्यप्रदेश के ग्वालियर निवासी श्रीधर पराड़कर का जन्म 15 मार्च, 1954 को हुआ। इनके पिताजी का नाम गोविन्द भाई पराड़कर और माता का नाम श्रीमती इंद्रा बाई पराड़कर है। वाणिज्य निष्णात की शिक्षा प्राप्त कर श्रीधर पराड़कर ने एकाउंटेंट जनरल कार्यालय में ऑडिटर के रूप में शासकीय सेवा प्रारंभ की, किंतु राष्ट्रप्रेम के वशीभूत होकर श्रीधर ने 1986 में शासकीय सेवानिवृत्ति लेकर अपना जीवन राष्ट्रोत्थान को समर्पित कर दिया।

साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति और राश्ट्र की अलख जगा रहे श्रीधर ने इंग्लैण्ड, श्रीलंका आदि देशों की यात्रा के साथ-साथ भारत में भी साहित्य संवर्धन यात्राएँ कीं, ताकि लेखक अनुभूत साहित्य का सृजन कर सके।

श्रीधर ने '1857 के प्रतिसाद', 'अद्‌भुत संत स्वामी रामतीर्थ', 'अप्रतिम क्रांतिद्रष्टा भगत सिंह', 'राष्ट्रसंत तुकड़ो जी', 'राष्ट्रनिश्ठ खण्डोबल्लाल', 'सिद्धयोगी उत्तम स्वामी', तथा अन्य महापुरुशों के जीवन चरित्र पर पुस्तकें लिखीं। श्रीधर ने दत्तोपंत ठेगड़े की पुस्तक 'सामाजिक क्रांति की यात्रा और डॉ० अम्बेडकर का मराठी से हिंदी में अनुवाद किया।

पाठ-परिचय –

'भारत भी महाशक्ति बन सकता है' नामक निबंध में लेखक ने भारतीयों में राष्ट्र के प्रति निराशा और भ्रम की स्थिति को दूर कर भारतीय जन-मानस में आशा और उत्साह के साथ राष्ट्रीयता का ज्वार पैदा करने का प्रयास किया है।

देशवासियों का भारत के बारे में अक्सर यह कहना कि ''अब कुछ नहीं हो सकता,.....इस देश का भगवान ही मालिक है'' लेखक को झकझोर देता है। 'सोने की चिड़िया' भारत का इतिहास हमारा गौरवमयी अतीत है जिसे भुला कर हमने अपने आत्मसम्मान और स्वाभिमान को विस्मृत कर दिया। आज भी विदेशों में सर्वाधिक माँग भारतीयों की ही है तथा भारतीय उद्योगपति विदेशों में भारत का डंका बजा रहे हैं। हमने युद्ध भी जीते हैं और वैश्विक प्रतिबंधों का हँस कर सामना भी किया है। भारत को पुनः महाशक्ति और विश्व गुरु बनाने के लिए विदेशों की ओर ताकना बंद करके हमें भारतीयों में आत्मविश्वास और आत्मगौरव का भाव पैदा करके उनकी सोच में सुधार करना होगा और सही नेतृत्व चुनना होगा।

•••

मूल पाठ –

देश की परिस्थिति के बारे में सामान्य आदमी से पूछे जाने पर केवल एक ही उत्तर मिलता है कि 'अब कुछ नहीं हो सकता, सब गड़बड़ हो रहा है, इस देश का भगवान ही मालिक है।' उसकी चिंता स्वाभाविक भी है। ऐसा कहते समय उसके सामने देश में चहुँओर फैला भ्रश्टाचार होता है; जिनके जिम्मे

व्यवस्था संभालने का दायित्व है, अव्यवस्था बढ़ाने में उन्हीं की सक्रियता होती है। जिन पर देश के नीति-निर्धारण का दायित्व है, उनमें नैतिकता का अभाव दिखाई देता है। सभ्य कहे जाने वाले उच्च वर्ग में भी स्वार्थ साधना का प्रयत्न देखा जाता है। इन्हीं सब कारणों से चिंतित होकर हताशा एवं निराशा भरे उद्‌गार व्यक्ति प्रकट करता है। ऊपरी तौर पर देखने से उसकी चिंता ठीक प्रतीत होती है।

क्या यह वास्ताविकता है ? क्या उसके सोच की दिशा सही है ?गंभीरता से विचार करने पर ध्यान में आएगा कि सामान्य आदमी परिस्थितियों के केवल नकारात्मक पक्ष को लेकर अपने विचार प्रकट करता है। भविष्य की बात करते समय जिन बातों पर विचार किया जाना चाहिए, उस ओर उसका ध्यान ही नहीं होता। क्या-क्या हो चुका है, क्या–क्या हो रहा है, क्या-क्या किया जा सकता है, इसका न तो वह विचार करता है और न ही उसे वास्तविकता का भान ही होता है ?

यदि हम अपने इतिहास पर दृश्टि डालें तो पता चलता है कि हमारा देश वही 'हिंदुस्तान' है जो पहले 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। हमारे सारे प्राचीन ग्रंथों में सुख-शांति, अकूत वैभव व ऐश्वर्य का वर्णन मिलता है। यह हमारा वैभव ही तो था जो विदेशी आक्रमणकारियों को हिंदुस्तान की ओर आकर्षित करता था। पहले-पहल आए सारे आक्रमणकारियों का एकमात्र उद्‌देश्य हिंदुस्तान को लूटना ही था। हर बार प्रत्येक आक्रमणकारी अपने साथ बेहिसाब सोना-चाँदी, हीरे-मोती लूट कर ले गया। यह सत्य है कि मुहम्मद गजनवी सोमनाथ मंदिर को लूट कर उसकी बेहिसाब संपदा को ले गया। भारत की चमक से चकित होकर अंग्रेज भारत में आए यहाँ की अपार संपदा को इंग्लैंड ले गए। विश्वास ही नहीं होता आज बात-बात में विदेशों की ओर देखने वाला भारत, कभी विदेशियों के आकर्षण का केंद्र हुआ करता था।

विश्व के किसी भी देश के पास ऐसी भूमि और संसाधन नहीं हैं, जो उसे सब प्रकार से संपन्न बना सके। प्रत्येक देश को किसी न किसी आवश्यकता के लिए दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। परिणामस्वरूप उसे दूसरे से दबना पड़ता है और अनिवार्य रूप से अवांछित समझौते करने पड़ते हैं। हमारी तो ऐसी कोई मजबूरी नहीं है। पिछले दिनों हम इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर चुके हैं। परमाणु परीक्षण करने के पश्चात् विश्व ने हम पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए थे। परिणाम क्या हुआ ? क्या हमारे देश का कोई काम रुका ? क्या देशवासियों को किसी विशेष कष्ट का सामना करना पड़ा ?कभी नहीं। इराक का क्या हुआ ?प्रतिबंध लगने के बाद उसे दाने-दाने के लिए तरसना पड़ा था।

हमारी जिस संपन्नता का वर्णन इतिहास में मिलता है, वह कहीं से लूट कर तो नहीं लाए थे। सब कुछ अपने ही देश में उत्पन्न किया था। वह भूमि, वे संसाधन आज भी हमारे पास हैं, जिनके बल पर हम फिर से उसी संपन्नता को अर्जित कर सकते हैं। केवल संसाधनों के उचित दोहन व अपनी आवश्यकता के अनुसार उपयोग करने की है। जैसे ही हम आवश्यक संतुलन बना लेंगे, हम अपना पुराना वैभव फिर से प्राप्त कर लेंगे।

आज विज्ञान का बोलबाला है। इसे विज्ञान का युग भी कहते हैं। विज्ञान के बारे में कहा जाता है कि यह पश्चिम जगत की देन है। सामान्य तौर पर देखने से दिखाई भी यही देता है कि आज के ज्ञात सारे के सारे आविष्कार पश्चिम से ही हुए हैं। परंतु यह एक मिथक है। योजनापूर्वक इस भ्रम का निर्माण किया गया है। जिस समय ये आविष्कार हो रहे थे, हमारा देश पराधीन था। अँगरेजों ने सोची-समझी साजिश के तहत हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति को तहस-नहस किया। जिस नई शिक्षा पद्धति को हम पर लादा गया,

उसके द्वारा हमें वही पढ़ाया गया जो अँगरेज चाहते थे। उन्होंने विज्ञान के नाम पर मात्र 19 वीं शताब्दी में हुए आविष्कार ही पढ़ाए। इतिहास के नाम पर विकृत इतिहास पढ़ा कर भारतीय समाज के आत्मसम्मान को नश्ट करने का प्रयास किया तथा उसे आत्मविस्मृति की गहरी खाई में ढकेल दिया। हमें पढ़ाया गया कि यहाँ पहले कुछ था ही नहीं। उसे अंधकार युग का नाम दिया और बाद में किए सारे कार्यों को अपना बताया।

उन्हें जो करना था उन्होंने किया किंतु विडंबना यह है कि स्वतंत्रता के लगभग 60 वर्ष के बाद भी हम उसी राग को अलाप रहे हैं। उसी को प्रमाण मान कर चल रहे हैं। कभी अपने गौरवपूर्ण वास्तविक इतिहास को जानने का प्रयास नहीं किया। जीवन के सभी क्षेत्रों में भारत के मनीषियों ने अद्‌भुत आविष्कार किए थे। बात अंतरिक्ष विज्ञान की हो, रसायन विज्ञान की हो, भौतिक विज्ञान की हो, चिकित्सा विज्ञान की हो अथवा निर्माण विज्ञान की। आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों में सर जे.सी.बोस, सी.वी. रमन, डॉ. होमी जहाँगीर भाभा, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आदि की वैज्ञानिक उपलब्धियों को हम कैसे विस्मृत कर सकते हैं ? भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा न्यूनतम खर्च में अपना स्वदेशी उपग्रह मंगलग्रह पर भेजना आज भी संपूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित कर रहा है। अमेरिका हमारी बौद्धिक क्षमता से भयभीत है। जिन लोगों ने हिंदुस्तान के गौरवपूर्ण अतीत को सामने लाने का प्रयास किया भी, उन्हें संकुचित मस्तिष्क का एवं प्रतिगामी बताकर उपेक्षित किया। आवश्यकता तो इस बात की है कि अपने ज्ञान-विज्ञान के उस भंडार को एक बार खंगालें। इससे हमारा अपना उद्‌धार तो होगा ही विश्व का कल्याण भी होगा।

सामान्यतः कहा जाता है कि हिंदुस्तान का आदमी कायर है, मूढ़ है, निकम्मा है; किंतु यह भी भ्रामक है। दूसरे विश्वयुद्ध की संभावित पराजय को टालने के लिए अँगरेजों को इसी देश के वीर पुत्रों की साहस-पराक्रम की आवश्यकता पड़ी थी। 1962 में हिमालय की दुर्गम परिस्थिति में बिना शस्त्रों के डट कर चीनियों का सामने करने वाले जवान इसी देश के थे। 1947, 1965 व 1971 में पाकिस्तानी फौजों को धूल चटाने वाले हिंदुस्तानी ही थे। नब्बे हजार की विशाल सेना को आत्मसमर्पण के लिए विवश करने वाली सेना हिंदुस्तान की ही थी। विश्व के इतिहास में ढूँढने पर ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा।

हिंदुस्तानी मूढ़ भी नहीं है। यदि ऐसा होता तो विश्व में भारतीय विद्‌वानों की मांग क्यों होती ? आज ऐसा कौन-सा विकसित देश है जहाँ महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ हिंदुस्तानी न संभाले हुए हों ? विश्व के सभी जाने-माने विश्वविद्यालयों में अध्यापन का कार्य करने वालों में हिंदुस्तानी अध्यापकों की संख्या कम नहीं है। विश्व की अधिकांश प्रयोगशालाओं में भारतीय वैज्ञानिक कार्य कर रहे हैं। कई देशों के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री, प्रशासनिक अधिकारी भारतीय अथवा भारतीय मूल के हैं। कई देशों की संसद में भारतीयों ने जनप्रतिनिधि बन कर वहाँ के समाज-जीवन में अपने महत्त्व को प्रतिपादित किया है। यह सब क्या मूढ़ कही जाने वाली जाति के लोग कर सकते हैं ? यदि भारतीय मूढ़ हैं तो देश के प्रमुख औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के बाहर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ डेरा क्यों लगाती हैं ?

तब लोग पूछ सकते हैं कि इतना सब कुछ होते हुए भी हमारी दुर्गति क्यों है ? पाठक के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक भी है। उपर्युक्त वर्णन करने का मेरा उद्‌देश्य भी यही बताना है कि हमारी समस्या संसाधन की कमी, मूढ़ता, आलस्य, अकर्मण्यता नहीं है। हमारी मूल समस्या आत्मविश्वास की कमी व आत्मप्रत्यय के अभाव की है। हमारी समस्या गलत दिशा के चुनाव की है। हमने स्वतंत्रता के इन 60 वर्षों में कभी भी भारत को भारत बनाने का प्रयत्न नहीं किया। हमने अपनी प्राथमिकताएँ तय नहीं कीं। पहले हम

भारत को रूस बनाना चाहते थे, अब इसे अमेरिका बनाना चाह रहे हैं। विदेशों के विकास के प्रारूप वहाँ के लिए ठीक हो सकते हैं। वहाँ की परिस्थिति भिन्न है, वहाँ के समाज की गढ़न भिन्न है, उनकी आवश्यकताएँ भिन्न हैं। उन्होंने अपने देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर अपने देश के विकास का प्रारूप तैयार किया है। हमें अपने देश की परिस्थिति, भौगोलिक स्थिति व समाज की मानसिकता तथा आवश्यकता के अनुरूप विकास का प्रारूप तैयार करने का प्रयत्न करना होगा। चीन का उदाहरण हमारे सामने है। अचार, पापड़, साबुन, मंजन जैसी वस्तुओं का उत्पादन बहुराष्ट्रीय कंपनियों को सौंप कर उसने अपने हाथ नहीं काट लिए। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को खुली लूट करने की छूट उसने नहीं दी। आज अपने दम पर वह महाशक्ति बन बैठा है। पर हम चीन से कुछ सीखने की कोशिश नहीं करते। हमारे राजनेता व प्रशासनिक अधिकारियों की आँखों पर अंग्रेज परस्ती का चश्मा बाकी कुछ देखने ही नहीं देता।

हमारी एक कठिनाई यह भी है कि हमने सत्ता को सब कुछ समझ लिया है। हमारे लिए सत्ता सर्वोपरि हो चुकी है। योग्यता अब सत्ता की कसौटी नहीं रह गई। अच्छे व बुरे का अंतर हमने भुला दिया। नैतिकता को लगभग तिलांजलि दे कर सत्ता प्राप्ति ही मुख्य ध्येय हो गया। इसके लिए अन्य कोई नहीं हम स्वयं ही दोषी हैं। अतः कहना होगा कि एक समय भारत महाशक्ति था और अब भी महाशक्ति बनने की पूरी क्षमता, योग्यता व जरूरी संसाधनों से परिपूर्ण है। कमी केवल महाशक्ति बनने के लिए आवश्यक दृढ़ इच्छाशक्ति की है।

•••

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सोने की चिड़िया किस देश को कहा जाता था ?

   (क)चीन (ख) जापान

   (ग) अमेरिका (द) भारत ( )

2. 'राष्ट्रनिष्ठ खण्डोबल्लाल' पुस्तक के लेखक हैं –

   (क) तुलसीदास (ख) श्रीधर पराड़कर

   (ग) अमृता प्रीतम (घ) नंदकिशोर पाण्डेय ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत को सोने की चिड़िया क्यों कहा जाता था ?
2. परमाणु परीक्षण करने पर भारत पर लगाए गए वैश्विक प्रतिबंधों का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?
3. भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति को किसने तहस-नहस किया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भारत की प्राकृतिक संपदा का वर्णन कीजिए।
2. विश्व के लोग भारतीयों पर क्या-क्या आरोप लगाते हैं ?
3. भारत की दुर्गति होने का क्या कारण है ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. भारत अब भी महाशक्ति बन सकता है। समझाइए।
2. भारत को महाशक्ति बनने से रोकने में बाधक तत्त्वों का वर्णन कीजिए।
3. भारत के गौरवमयी अतीत का वर्णन कीजिए ।
4. आपकी दृष्टि में क्या भारत विश्वशक्ति बनने की ओर अग्रसर है, विचार प्रस्तुत कीजिए।
5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) यदि हम अपने इतिहास पर.....केंद्र हुआ करता था।

   (ख) हिंदुस्तानी मूढ़ भी नहीं.....बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ डेरा क्यों लगाती हैं ?

•••